जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(शुभारंभ : १५-८-१९६९) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

☎ : (०२०) २४२१५५८३

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖

स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया एम.ए.

संपादिका : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया बी.कॉम.

❖ वर्ष ४७ वे ❖ अंक १० वा ❖ जून २०१६ ❖ वीर संवत २५४२ ❖ विक्रम संवत २०७२

या अंकात	पान नं.		पान नं.
● आन्तरिक सौन्दर्य को निखारिए	१५	● श्रमण संम्मेलन – पालीताना	६५
● जैन कॉन्फरन्स राष्ट्रीय अध्यक्षपद उम्मीदवार श्री. मोहनलालजी चोपडा को बढत	१९	● गोल्डन डायरी	७०
● जैन कॉन्फरन्स – पंचम झोन	२०	● मैं जिंदगी का साथ निभाता चला गया – तनाव	८१
● जैन कॉन्फरन्स – चतुर्थ झोन	२०	● प्रवचन मोती	८५
● गौतमलब्धी फाऊंडेशन, पुणे	२१	● चकट फू सल्ला	८६
● कव्हर तपशील	२३	● आई-वडीलांसाठी मुलांचे कर्तव्य	८७
● महामंत्र की साधना	३१	● स्थानकवासी जैन संघ, श्रीरामपूर	९१
● जबकि	३६	● ईर्या रो पालन कर	९३
● महावीर का स्वास्थ दर्शन	३७	● योगसाधना और आरोग्य	९७
● अन्तिम शिक्षा	४१	● जलसंरक्षण सबसे बडी मानव सेवा	१०७
● क्रोध आबाद तो जीवन बरबाद	४३	● हास्य जागृति	१०९
● बालदीक्षा के संभवित राजकिय अवरोधोंने दूरीकरण के बारे में निवेदन	५३	● सिध्दी फाऊंडेशन – रक्तदान शिबिर	१११
● चमत्कारांचे फसवे मायाजाल	५८	● आनंद बाल संस्कार शिबिर – अहमदनगर	११२
● कर्तृत्वाचे आणि दातृत्वाचे मुर्तिमंत प्रतिक श्री. माणिकशेठ दुगड, पुणे	६१	● जैन सोशल ग्रुप, पुणे मिडटाऊन	११४
		● मेट्री मोनियल गेट टू गेदर – पुणे	११५

- श्री आशापुरी मंदिर, पुणे ११५
- जैन सोशल ग्रुप महाराष्ट्र रिजन – नाशिक ११६
- पुणे मर्चन्ट चेंबर ११९
- संचेती ट्रस्ट, पुणे ११९
- गुरु आनंद फाऊंडेशन, चिंचोडी १२०
- आनंद अचल ग्रुप फाऊंडेशन, पुणे १२१
- पुरुषार्थ ही हमारे भाग्य का निर्माण करता हैं १२७
- किसलिए यहाँ नफरत बोना है ? १३०
- भारत व दुबई – दृष्टीकोन हा एक मूलभूत फरक १३२
- ध्यान हैं, प्राणतत्त्व १३४
- कडवे प्रवचन १३४
- भाषणों का वर्गीकरण १३६
- तेजकिरण १४०
- विविध धार्मिक, सामाजिक व राजकिय बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन विशेषांकासहित

❖ पंचवार्षिक वर्गणी –१५५० रु. ❖ त्रिवार्षिक वर्गणी – ९५० रु. ❖ वार्षिक वर्गणी – ३५० रु.

(बाहेरगावच्या चेकला १०० रु. जास्त) ❖ या अंकाची किंमत ४० रुपये.

❖ वर्गणी व जाहिरात रोखीने/On line/RTGS/AT PAR चेक/पुणे चेकने/मनीऑर्डर/ड्राफ्टने/'जैन जागृति' नावाने पाठवावी.

● www.jainjagruti.in ● www.facebook.com/jainjagrutimagazine

हे पत्रक संपादक, प्रकाशक, मुद्रक व मालक श्री. संजय कांतीलाल चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, पर्वती, पुणे ९ येथे छापून ६२, ऋतुराज सोसायटी, पुणे ३७ येथे प्रसिद्ध केले. लेखकांच्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवायीसाठी पुणे न्यायालय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

'जैन जागृति' – वर्गणी बँकेत भरू शकता

जैन जागृति मासिकाची वर्गणी रोखीने, मनीऑर्डरने, पुणे चेक, ॲट पार चेक, ड्राफ्टने पाठवावी किंवा **'भारतीय स्टेट बँक'** मध्ये जैन जागृति खात्यात वर्गणी भरू शकता. बँकेच्या पे स्लीपवर **'जैन जागृति'** लिहावे. बँकेचा तपशील पुढीलप्रमाणे

STATE BANK OF INDIA Branch - Market Yard, Pune.
Current A/c No. : 10521020146 IFS Code : SBIN0006117

आपण जर वर्गणी बँकेत भरली तर वर्गणी भरल्यानंतर पे स्लीपची झेरॉक्स बरोबर आपला ग्राहक क्रमांक, पूर्ण नाव, पत्ता, मोबाईल नंबर ऑफीस मध्ये पाठवावे अथवा बँकेची स्लीप स्कॅन करून E-mail : jainjagruti1969@gmail.com वर पाठवावी. ई–मेलमध्ये ग्राहक क्र., पूर्ण नाव, पत्ता, फोन, मोबाईल नंबर द्यावा म्हणजे आपल्या नावाने वर्गणी जमा केली जाईल.

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर

पंचवार्षिक	१५५०/–रु.	त्रिवार्षिक	९५०/–रु.	वार्षिक	३५०/–रु.

जैन जागृति मासिकात जाहिरात व वर्गणीसाठी संपर्क करा

फोन (०२०) २४२१५५८३, **मो. संजय:९८२२०८६९९७ सुनंदा:९४२३५६२९९१ www.jainjagruti.in**

Email : jainjagruti1969@gmail.com ● Press Email : prakash.offset@rediffmail.com

◆ जैन जागृतिचे प्रतिनिधी ◆

- **भोसरी, चिंचवड, निगडी –** श्री. चांदमलजी लुंकड – फोन : २७११९९४९, मो. ९९२१९१९४०९
- **पुणे शहर ❖कुर्डुवाडी –** श्री. सुभाष मोहनलाल लुणिया, मो. ८७९३००००८१
- **गुरूवार पेठ, पुणे –** श्री. जैन पुस्तक भंडार, फोन : २४४७२९५८
- **धनकवडी, पुणे –** श्री. सुरेंद्र हिरालालजी बोरा, मो. ७५८८९४३०१५, ९९२२१११९६७
- **महावीर प्रतिष्ठान, पुणे –** निलम रमेशचंद्र शहा, मो. ९०९६८००५४७
- **सदाशिव पेठ, परिसर, पुणे –** सौ. स्वाती राजेंद्रजी कटारिया, मो. : ९८८१२०४३९०
- **वडगाव शेरी, पुणे –** सौ. भारती सुभाष नहार, मो. : ९८९०२७८३४६
- **वडगाव मावळ, पुणे –** श्री. राजेंद्र बाफना, मो. ९८२२२६२९०१
- **खडकी, पुणे –** श्री. विलास मुथा, मो. ९६२३१४८९८४
- **औंध, पाषाण, हिंजवडी, सांगवी, थेरगाव –** श्री. शिरिषकुमार शांतीलालजी डुंगरवाल, मो. ९०२१३००५५९
- **दापोडी, पुणे –** श्री. प्रवीण झुंबरलालजी चोरडिया, मो. ९९२२७५७७०६
- **नांदेड सिटी, पुणे –** श्री. प्रकाशजी हरकचंदजी बोथरा, मो. ९०११९८३६६६
- **दौंड, श्रीगोंदा –** श्री. रविंद्र चेनसुखलालजी गुगळे – ९८९०७२३४०२
- **घोडनदी, जि. पुणे –** श्री. पारसमलजी बांठिया, मो. : ९२२५५४२४०६
- **अहमदनगर –** श्री. महेश एम. मुनोत– मो. ९४२०६३९२३०
- **जामखेड, आष्टी व कर्जत तालुका –** श्री. प्रफुल शांतीलालजी सोलंकी – मो. ९४०३६८५६७७, ८०८७७०००७०
- **सोनई –** श्री. मदनलालजी सी. भळगट – फोन : ०२४२७–२३१४६१
- **औरंगाबाद –** श्री. सुभाषचंदजी मांडोत–फोन: (०२४०) २३५३४३८ मो.: ९४२२७०५९२१
- **मुंबई** खारघर– श्री. मदनलालजी गांधी–मो. ९८२०५३६७९३
- **धनसोली, नवी मुंबई –** श्री. सुभाष केशरचंदजी गादिया, मो. ९१५८८८८६८५
- **नाशिक –** श्री. पुखराजजी बाबुलालजी जैन (कवाड) फोन:०२५३–२३११००८,मो.९४२३९३९९९०
- **नाशिक –** मनोज लखीचंदजी खिंवसरा, रविवार पेठ, नाशिक. मो. ९७६२२२१५०५
- **बीड –** श्री. अतुलकुमार शरदचंद्रजी कोटेचा, मो. ९९६००२४२२४
- **गारगोटी** (जि. कोल्हापूर) श्री. श्रीकांत राजाराम शहा, मो. ९८६०१०७७९२
- **श्रीरामपूर –**श्री. निलेश सुवालालजी हिरण, मो. : ९३२६९७२७४७
- **लासलगाव –** श्री. मनसुखजी साबद्रा, मो. : ९३२६३२५३४७
- **बारामती–** डॉ. महावीर छगनलालजी संचेती, फोन : ०२११२–२२३८०७ मो.:९३२५००४९५०
- **अंमळनेर, जि. जळगाव –** श्री. मयुरकुमार केवलचंदजी जैन, मो. ९४२२६५७१७७
- **जळगाव –** श्री. अनील कुचेरिया, मो. : ९७६३६४५०५५
- **धुळे –** श्री. चेतन सतिष कोटेचा, सुभाषनगर, धुळे, मो. ९४०४१९२४३४, ९४२०६६१४२६
- **शहादा, जि. नंदुरबार –** श्री. मनोजकुमार विरचंदजी बाफना, मो. ९४२१५२९६२६
- **इचलकरंजी, जि. कोल्हापूर –** श्री. पोपटलालजी बिसनदासजी गुगळे, मो. ९८२२६५०९९८
- **मिरज, जि. सांगली –** श्री. राजेंद्र वसंतलाल शहा, मो. ९४२११०५७४८
- **कोल्हापूर –** सौ. लता कांतीलालजी ओसवाल, मो. ९४२३२८६०१४ फोन.०२३१–२५४२२५३
- **सातारा व सातारा जिल्हा –** श्री. जयकुमार कांतीलाल शहा, वाठार, मो. – ७५८८५६१३२०, ९८५०१८२६४४

आन्तरिक सौन्दर्य को निखारिए

प्रवचनकार : आचार्य प्रवर श्री हीराचंद्रजी म.सा.

आज समस्त विश्व भौतिकता की चकाचौंध में चुँधिया गया है। अधिकांश लोग 'सौंदर्य' शब्द को शरीर तक ही सीमित बनाकर शरीर को सजाने को प्रमुख लक्ष्य मान बैठे हैं। कुछ लोग चमडी की कोमलता एवं सुंदरता को ही रुप मानते हैं, कुछ कपड़ों-गहनों-आभूषणों की सजावट को ही सौन्दर्य का नाम देते हैं तो कुछ घर साफ-स्वच्छ रहे, सजा-संवरा रहे, इसे ही सुन्दरता या रुप का निखार मानते हैं।

कोकीलानां स्वरो रुपम्

शरीर, घर, सडक, दुकान आदि को सजाना, संवारना स्वच्छ करना बाह्य सौंदर्य है । जीव का मुख्य लक्ष है अन्तर के सौन्दर्य को विकसित करना, उसके अपने निजी गुणों को प्रकट करना । नीतिकारों के अनुसार सौन्दर्य आन्तरिक होता है। एक नितीकार ने कहा है-

कोकिलानां स्वरो रुपं, नारीरुपं पतिव्रतम्।
विद्या रुपं कुरूपाणां, क्षमा रुपं तपस्विनाम्।।

कोयल का वर्ण एकदम काला है, परन्तु उस कालिमा में भी सौन्दर्य है उसकी मीठी वाणी। किसी पेड़ की ऊँची टहनी पर, घने पत्तों में छिपी हुई कोकिल जब अपना कंठ-स्वर छेडकर 'कुहु-कुहु' की टेर गुंजाती है तो सुनने वाले आवाज की ओर टकटकी बांधकर उसे देखने के लिए उत्सुक हो जाते हैं। काला तो कौआ भी है, पर उसमें वाणी का सौन्दर्य नहीं। गायक-कलाकार के पास मधूर-स्वर और गान-कला है तो उसकी शारीरिक कुरुपता गौण हो जाती है। श्रोता उसकी स्वर-सुधा के रस में मग्न हो आनन्द की प्राप्ति करते हैं।

नारीरुपं पतिव्रतम्

दूसरा उदाहरण दिया है नारी का। नारी यदि शीलवती है, पतिव्रत-धर्म का पालन करनेवाली है, सुन्दर हो या असुन्दर, पर नीतिकार उसे धर्मशील, आन्तरिक सौन्दर्य-सम्पन्न मानकर उसकी पूजा करने की बात कहते हैं

पतिव्रता फाटा लत्ता, धन वांको दीदार।
कहे कालु किस काम का, वेश्या का श्रृंगार।।

एक तरफ फटे हुए कपड़े हैं, झोंपड़ी है निर्धन जीवन है पर पतिव्रत-धर्म है और दूसरी तरफ कदम-कदम पर धन है, ऐश्वर्य है, पर नारी रुप में वेश्या की वृत्ती है, अब यदि उसने अपने शरीर पर सोलह श्रृंगार भी सजा लिए तो कवि कालु कहता है कि वह श्रृंगार, वह धन व्यर्थ है।

शीलसम्पन्न नारी ने चलनी से पानी खींच कर विश्व के समक्ष शील के माहात्म्य को प्रकट किया था। शील नारी की तो शोभा है ही, किन्तु यह नर की भी शोभा है।

विद्या रुपं कुरूपाणाम्

तीसरी बात कुरुप, काले, आदर्शनीय व्यक्ति के लिए बताई गई है । यदि ऐसे व्यक्ति के पास विद्या है, कला है, हुनर है, तो वह जन-जन का प्रिय और पूज्य बन जाता है। कालिदास सुदर्शन नहीं थे, सूरदास शारीरिक सौन्दर्य से हीन-चक्षुविहीन थे, पर अपनी काव्य-कला के बल पर दोनों ने सम्पूर्ण विश्व के साहित्यकारों में अमर कीर्तिमान स्थापित किया। पीपाड में एक थे-धूलचंदजी सुराना। प्रज्ञाचक्षु थे, पर घड़ी का एक-एक पुर्जा खोल कर पुन:यथास्थान रख कर, उसे ठीक करने की कला में माहिर थे। भोपालगढ़ में एक वैद्यजी थे। धुलचंदजी ही नाम उनका, जाति से रांका थे। उनकी विशेषता थी कि वे रोगी की नाड़ी को बाद में देखते, किन्तु उसकी आवाज सुनकर ही उसके शरीर में विद्यमान रोग को पहचान लेते थे । शरीर के रोगों का निदान करने वाले सैकडों, हजारों की संख्या में आपको मिलेंगे । कदम कदम पर अत्याधुनिक खर्चीले परीक्षण, भारी इंजेक्शन, केपसुल, टेबललेट्स देना आम बात है । एक प्रेस्क्रिप्शन फिट नहीं बैठा तो दूसरी दवाइयाँ बदल देते

हैं। पर ऐसे भी वैद्य थे, जिनकी दवाइयाँ रामबाण दवा का कार्य करती थीं। वे कहते थे-दवा की ये तीन पुडियाँ ले लो, जीवनभर यह रोग शरीर में फिर नहीं आएगा और ऐसा ही होता भी था। उनके पास अनुभव का खजाना था, ज्ञान का कोश था। अपनी विद्या में वे धन्वन्तरि-तुल्य समझे जाते थे। बतलाइए-वे सुन्दर या रुपवान थे या नहीं? आध्यात्मिक क्षेत्र में अध्यात्म-विद्या में पारंगत जो बने उन्हें क्या आप कुरूप कह सकेंगे। हरिकेशी कुरुप था काला-कलूटा था, पर आध्यात्मिक-साधना के बल पर वह देवों का पूज्य बन गया। तो पुरूष के लिए नीतीकार ने सही कहा है-'विद्या रुपं कुरूपाणां।'

क्षमा रुपं तपस्विनाम्

तपस्वियों में यदि क्षमाशीलता का सौन्दर्य है तो वे सुन्दर हैं, रुपवान हैं, प्रशंसनीय - वंदनीय हैं। जो तपस्वी जितना क्षमाशील होगा वह उतना ही लब्धि-सम्पन्न होगा। पंच महाव्रतधारी, चारित्रपर्याय में विचरण करने वाले, अणगार धर्म की आराधना करने वाले संयम - साधकों का सौन्दर्य है क्षमा।

रुप सम्पन्नता : चार भङ्ग

स्थानाङ्गसूत्र के चतुर्थ स्थान में मानवीय रुप सौंन्दर्य के चार भंग (प्रकार) बतलाए गए हैं-

रुवसंपण्णे णाममेगे णो गुणसंपण्णे।
गुणसंपण्णे णाममेगे णो रुवसंपण्णे।
एगे रुवसंपण्णे वि गुणसंपण्णे वि।
एगे णो रुवसंपण्णे णो गुणसंपण्णे।

एक वह जो रूप से तो सम्पन्न है पर गुणों से, शील से, चारित्र से सम्पन्न नहीं। दूसरे पुरूष वे हैं जिनमें गुण ही गुण हैं पर रुप नहीं है। तीसरे भंग में ऐसे साधक -पुरूष हैं जो रूप-सम्पन्न भी हैं और गुण-सम्पन्न भी। अन्तिम प्रकार के पुरूषों में वे आते हैं जो न रुप सम्पन्न हैं और न गुण सम्पन्न।

प्रथम भङ्ग

अन्तिम प्रकार के पुरूष जघन्य हैं, निकृष्ट हैं, पर महात्माओं की मान्यता में प्रथम प्रकार के पुरूष उनसे भी अधिक खतरनाक हैं। सर्वाधिक पतन का यदि कोई भंग है तो वह है - रूप का होना, किन्तु गुण का न होना। तन गोरा, मन काला। चमडी श्वेत, चमकदार, पर गुण एक भी नहीं। दुनिया में जितने भी अनर्थ मानव सृजित हुए हैं उनमें सर्वाधिक अनर्थ ऐसे ही व्यक्तियों के कारण हुए हैं। अधिकतम संग्राम, लाखों -करोडों इन्सानों का घमासान, लाशों का अम्बार इन्ही की देन है। ऐसे व्यक्ति चमड़ी को सजाने, शरीर को सुविधामय बनाने के लिए पल -प्रतिपल प्रयासरत रहते हैं, पर भीतर की गंदगी, अन्तर का अंन्धकार, आत्मा पर पड़ी रज मेल को धोने, पाप - प्रवृत्तियों को मिटाने का तनिक भी प्रयास नहीं करते। इस धरती पर पाप का बोझ ऐसे ही गुणहीन व्यक्तियोंसे बढ़ता है। अन्याय और अत्याचार के प्रसारण में वे ही हेतु होते हैं। अत: शास्त्रकारों ने हरपल आत्मोन्मुखी बनकर आत्मभाव में रमण करते हुए आत्मिक गुणों के द्वारा आत्मा के सौन्दर्य को बढ़ाने की प्रेरणा दी है।

द्वितीय भङ्ग

जिनमें गुण है पर रुप नहीं, जो ज्ञानवान हैं, पर दर्शनीय नहीं, जो श्रद्धावान हैं पर सुन्दर नहीं, ऐसे व्यक्ति तन से काले एवं मन से गोरे होते हैं। वे दया, सत्य, शील, सदाचार, क्षमा, विनय आदि गुणों को लेकर जीवन में आगे बढ़ते हैं। कदाचित् अपने अदर्शनीय, असुन्दर एवं कुरूप तन के कारण वे दूसरों को आकर्षित नहीं कर पाएँ, पर वे अपनी आत्मा के सौन्दर्य को उजागर कर अपना कल्याण अवश्य कर पाते हैं। यदि कोई उनके गुणों की ओर आकृष्ट हो जाए तो उसका भी कल्याण सुनिश्चित बन जाता है। राजस्थान के राज कवि राजिया का एक दूहा आता है-

काली घणी कुरूप, कस्तूरी कांटे तुले।
शक्कर घणी सुरूप, रोडे तुले राजिया।।

कस्तूरी का रंग काला होता है, वह कुरूप और बेडौल होती है, पर उसमें जो विशेष गुण है उस गुण के कारण उस पर सभी मुग्ध हैं। उसकी सुगन्ध सभी को

आकृष्ट करने वाली, दूर-दूर तक प्रसरण करने वाली होती है। काली कलुटी कुरूप होने मात्र से यदि उसका तिरस्कार किया जाए, उससे मुँह फेर लिया जाए, घृणा की जाए तो यह सरासर उसके गुणों से अनभिज्ञता ही होगी। आपको ज्ञात है कस्तुरी को छोटे कांटे पर तोला जाता है, जबकि शक्कर श्वेत होती है किन्तु उसे बडे तराजू से तोला जाता है।

आप काले और गोरे की पहचान करते हैं, पर किससे करते हैं यह पहचान ? आँख की कीकी का रंग काला होता है। काले रंग को ही यदि रुप-सौन्दर्य का बाधक तत्व माना जाय तो फिर आँख की काली कीकी का क्या होगा ? यदि यह गोरी हो जाए तो सारे गोरे काले हो जाएँगे। सारा प्रकाश अन्धकार में बदल जाएगा । आँख में फूला आ जाए, मोतियाबिन्द हो जाए, जाला पड़ जाए तो उसके लिए तो सम्पुर्ण संसार ही काला, विद्रुप, अदर्शनिय हो जाएगा । काले शरीर के सौन्दर्य को बढ़ाने वाले होते हैं, आँख में लगाया गया काला काजल मुख की सुन्दरता की वृद्धि करता है।

आज विश्व के अधिकांश मानव-समाज की दृष्टी बाहर के कालेपन को, कुरूपता को देखती है, पर भीतरी कालेपन पर कोई-कोई ही ध्यान दे पाता है। यही बात गोरेपन की है। जो शरीर से गौरवर्ण है, सुन्दर सुरुप है, उस पर तो सभी की नजरें चली जाती है पर जिसका मन सुन्दर है, जो गुणवान है, काला और हुनर का उस्ताद है, आत्मबली है उस पर कितने लोग ध्यान देते हैं? शास्त्रकारों ने कहा - चमड़ी का कालापन उतना खतरनाक नहीं, जितना मन का कालापन। दुनियाँ कहती है - 'काला किसन जी'। पर वे कृष्ण क्या थे, यह किसी से से छिपा नहीं है। इतने गुणी, इतने नितीवान् कि उनका सारा कालापन उनमें छुप गया, तिरोहित हो गया और वे संसार के पूज्य बन गए। तीर्थंकर तीर्थ की रचना कर जगतकल्याणी वाणी में अमृतोपम द्वारा जन-जन के आत्मोद्धार का मार्गदर्शन करने वाले होते हैं। ऐसे विश्वबन्धु, जगत्पूजनीय, जन-जन की श्रद्धा के केंन्द्र तीर्थंकर भगवन्तों में भी दो तीर्थंकर कृष्णवर्णी थे, तो क्या उस कृष्ण वर्ण से उनकी रुप-सौरभ, उनकी गुण-सौरभ में कोई कमी आ पाई?

तृतीय भङ्ग

तीसरा भंग उनसे सम्बद्ध है जिन्हें बाहर की सुन्दरता, गौर-वर्ण, प्रशस्त-भाल, सुष्ठु-अवयव भी मिले और गुण सम्पन्नता भी मिली। स्वर्ण में सुगंध का मेल। जब बाह्य कांति, शरीरिक-लावण्य देखकर ही मुग्ध बना जा सकता है, आकर्षण में बंधा जा सकता है तो रुप ओर गुण दोनों की सम्पन्नता होने पर तो कहना ही क्या? जिन्हें देख-सुनकर अनास्थावान आस्थावान बनते हैं अधर्मी धर्म की ओर अग्रसर होते हैं वे महान् भाग्यशाली होते हैं उनके सम्पर्क में आने वाले भी भाग्यशाली बन जाते हैं। तीर्थंकर भगवन्त को ही लीजिए। गुण-सम्पन्न भी हैं वे और रुप सम्पन्न भी। महापण्डित इन्द्रभूति ज्ञान के अभिमान से ग्रसित था। अत: उसने तीर्थंकर प्रभु को इन्द्रजालिया कह दिया। प्रभु से वाद एवं शास्त्रार्थ के निमित्त वह प्रभु समवसरण में आया। देखता है समवसरण की निराली छटा, देखता है प्रभु की तेजस्वी मुखमुद्रा और उस तेज के सम्मुख आधा अहं तो तुरन्त नष्ट हो गया। ऐसा रुप जिसके सम्मुख कोई अन्य रुप ठहर नहीं पाता। सभी प्राणियों में सर्वोत्कृष्ट, अद्वितीय, अतुलनीय।

बन्धुओं कोई कितना ज्ञानी है, कितना श्रद्धावान् है, कितना संयमी है, कितना चारित्रवान है, कितना गुण-संपन्न है, कितना क्षमाशील-सहनशील- धैर्यवान है, आदि बातों का पता तो तब चलता है जब उससे सम्पर्क होता है, बातचीत होती है। पहचान, जाँच और परीक्षा के बाद ही हम उसके गुणों का पता लगा सकते हैं। प्रथमत: तो बाह्य रुप ही आकर्षण का कारण बनता है और तीर्थंकर भगवन्त के बाह्य रुप, उनके शरीर की कांति और सौन्दर्य का तो कोई जवाब है ही कहाँ? प्रभु के बाह्य सौन्दर्य से मुग्ध बने इन्द्रभूति जब अपनी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त करते हैं तो उनके अहंकार

की समस्त कालिमा नष्ट हो जाती है, अजीर्ण बने ज्ञान का भूत तुरन्त उतर जाता है। वे अपने सभी पण्डित-शिष्यों सहित प्रभु के चरणों की शरण ग्रहण कर संयम के पथ को स्वीकार कर लेते हैं ।

स्वयं इन्द्रभूति गौतम कम सौंदर्यवान नहीं थे। तीर्थंकर भगवन्तों के पश्चात बाह्य व आन्तरिक, शारीरिक व आत्मिक सौन्दर्य में गणधर श्रेष्ठ होते हैं। गणधरों की बाह्य रुप ज्योति देवों से अधिक सुन्दर होती है। गणधरों के पश्चात् वैमानिक देव रुपवान् हैं। महाराज श्रेणिक के रुप सौन्दर्य की बात आती है शास्त्रों में। वेअपनी महाराणी चेलना के साथ राजसी ठाट से समवशरण में जाते हैं। शास्त्रकार लिखते हैं कि उनके शारीरिक व भौतिक सौन्दर्य की चकाचौंध में ऐसे साधु-साध्वी जो अंतरंगता में उतरे नहीं थे, इस तरह डूबे कि निदान कर बैठे।

जिस श्रेणिक का ऐसा रुप था, उसने अपने भ्रमण कार्यक्रम में एक बार मण्डीकुक्षि नामक उद्यान में अनाथी मुनि को ध्यानमग्न देखा। वे अनाथी मुनि सुकुमार होते हुए भी संयम, शील और समाधि से युक्त थे तथा अत्यन्त प्रसन्नचित्त प्रतीत होते थे। उनके उत्कृष्ट रुप-सौन्दर्य को देखकर राजा श्रेणिक के मुँह से निकला

अहो वण्णे अहो रुवं, अहो अज्जस्स सोमया।
अहो खंती अहो मुत्ती, अहो योगे असंगया।।

धन्य है इन मुनिवर का शारीरिक-वर्ण एवं रुप। धन्य है इनकी क्षमा, निर्लोभता और भोगों से निस्पृहता। मुनि के शरीर पर कोई श्रृंगार नहीं, एक भी आभूषण उनके द्वारा धारण किया हुआ नहीं, प्रसाधनों की सजावट से सर्वथा रहित । कृत्रिम सौंदर्य का नामो-निशान नहीं, पर रुप-लावण्य उन मुनिवर का ऐसा कि महाराज श्रेणिक भी आश्चर्य में पड़ गए । ऐसी सुन्दरता जहाँ हो वहाँ कृत्रिम सौन्दर्य की जरूरत भी क्यों हो ? जिसके पास नैसर्गिक सौन्दर्य नहीं उसे जरुरत पड़ती है बनावटी सौन्दर्य की, प्रसाधनों की व आभूषणों की।

चतुर्थ भङ्ग

इस भङ्ग के अंतर्गत वे मनुष्य आते हैं जो न बाह्य रुप से सुन्दर है और न ही आन्तरिक गुणों से सम्पन्न हैं।

वास्तविक सौन्दर्य

बन्धुओं ! वास्तविक सौन्दर्य तो है भीतरी सौन्दर्य, आत्मा की सुरुपता। बाह्य और बनावटी सौन्दर्य जड़ है एवं नश्वर है। वह असुन्दरता में भी बदल जाता है। आज व्यक्ति गोरा-चिकना, भरा-भरा व हृष्ट-पुष्ट है पर उसकी अन्तिम मंजिल क्या, आखिरी पड़ाव क्या है? राख की ढेरी। बाह्य सौन्दर्य रोगादि से असुन्दर हो सकता है। तीव्र ज्वर आने पर व्यक्ति का गौरवर्ण कृष्णवर्ण में बदल सकता है। तो जो बदल सकता है, जिसका अन्तिम परिणाम जलकर राख होना है उस पर इतना अभिमान क्यों? यदि संवारना ही है तो आत्मा को संवारने पर ध्यान दीजीए, अनास्था के अन्धकार को मिटा दीजिए, पाप के पंक को धो डालिए और आत्मा को चारित्रिक आभूषणों से सुसज्जित करने के लिए अग्रसर हो जाइए। फिर जीव का अर्द्धपुद्गल परावर्तन से मोक्ष गति में जाना निश्चत हो जाएगा।

आन्तरिक सौन्दर्य को निखारिए

आज आवश्यकता है भीतर के सौन्दर्य को निखारने की, जरुरत है आत्म-गुणों के विकास की। इसके लिए व्यक्ति के ज्ञान, दर्शन, चारित्र रुप रत्नत्रयी की आराधना पर ध्यान देना चाहिए । उसे व्रतों और शाश्वत सुख देने वाले गुणों को ग्रहण करना चाहिए। एक बार कषाय की कालिमा को नष्ट कर दीजिए, फिर शाश्वत-सुख आपके पास होगा। वीतराग वाणी और संत-समागम इसी उद्देश्य की प्राप्ती की ओर बढ़ने वाला कदम है। आप बाहर से रुपवान हैं, भीतर से भी रुपवान बनने का प्रयत्न कीजिए, अन्यथा यह रुप, यह शारीरिक सौन्दर्य आपको ले डूबेगा। तन का गोरापण या कृष्णवर्ण, शरीर की सुन्दरता या कुरूपता आपके-हमारे हाथ की बात नहीं है, पर अंतर का सौन्दर्य प्राप्त करना, आत्मा के उजलेपन को प्रकट करना आपके-हमारे वश की बात है। आप चाहें तो आस्थावान् बन सकते हैं, व्रती बन सकते हैं, मन पर नियंत्रण कर संयमी बन सकते हैं। इस तरह ज्ञान, दर्शन, चारित्र की सुरभी बढ़ाकर कषायों और पापों से हटेंगे तो सुख-शान्ति एवं आनन्द की प्राप्ति होगी। ●

कव्हर तपशील - जून २०१६

❖ **विशाल श्रमण संमेलन – पालिताणा**
तीर्थाधिराज श्री शत्रुंजय तीर्थ, पालीताणा येथे निश्रानायक राष्ट्रसंत प.पू.आ.श्री. पद्मसागरसुरि म.सा. व आचार्य प.पू. आ.श्री. हेमचंद्रसुरीश्वरजी म.सा. आदी १८ गच्छाधिपती, ५०० साधू भगवंत, २००० साध्वीजी म.सा. यांच्या उपस्थितीत २६ मार्च ते ३ एप्रिल २०१६ या काळात विशाल श्रमण संमेलनाचे आयोजन झाले.

❖ **गुरु आनंद तीर्थ, चिंचोडी – वर्षीतप**
गुरु आनंद फाऊंडेशन तर्फे आचार्य श्री आनंदऋषिजी म.सा. यांची जन्मभूमि चिंचोडी येथे उपाध्याय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा. यांच्या प्रेरणेने भव्य आनंद तीर्थ निर्माण करण्याचे कार्य सुरु झाले आहे. गत ३ वर्षापासून येथे अक्षय तृतीय वर्षीतप पारण्याचे आयोजन केले जात आहे. यावर्षी ९ मे रोजी तपआराधिका प.पू. मंगलज्योतीजी, प.पू. प्रीतिदर्शनाजी आदी ठाणा यांच्या सान्निध्यात ८० तपस्वीचे वर्षीतप पारणे संपन्न झाले.

❖ **श्री. मोहनलालजी चोपडा – नाशिक**
जैन कॉन्फरन्सचे राष्ट्रीय अध्यक्षाची निवडणूक २२ मे रोजी संपन्न झाली. राष्ट्रीय अध्यक्ष पदासाठी जय जिनेंद्र ग्रुप तर्फे श्री. मोहनलालजी चोपडा-नाशिक व परिवर्तन पॅनल तर्फे श्री. अशोक बोरा (बाबुशेठ) हे उमेदवार होते. २२ मे रोजी तामीळनाडू सोडून बाकी सर्व झोन मध्ये निवडणूक संपन्न झाली. निवडणूक झालेल्या भागातून श्री. मोहनलालजी चोपडा यांना २१७८ मतांची आघाडी मिळाली आहे.

❖ **श्री. अभयजी संचेती – पुणे**
पुणे येथील युवा कार्यकर्ते श्री. अभयजी बनसीलालजी संचेती यांची अखिल भारतीय श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स पंचम झोन राष्ट्रीय कार्यकारिणीत निवड झाली आहे. त्यांच्या या निवडीबद्दल जैन श्रावक संघ, धनकवडी व अरिहंत सोशल ग्रुपची कार्यकारिणीनी त्यांचा सन्मान केला.

❖ **जैन कॉन्फरन्स पंचम झोन – जय जिनेंद्र ग्रुप**
अखिल भारतीय जैन कॉन्फरन्सच्या द्विवार्षिक निवडणुकीत पंचम झोन मधील राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्यपदाच्या १४ पैकी १३ जागा जिंकून जय जिनेंद्र ग्रुपने वर्चस्व प्रस्थापित केले आहे. जय जिनेंद्र ग्रुपचे विजयी उमेदवार सर्वश्री आदेश खिंवसरा, अभय संचेती, किर्तीराज दुगड, प्रकाश बोरा, नितिन चोपडा, नेमीचंद सोळंकी, सागर सांकला, दिलीप पगारिया, प्रफुल्ल कोठारी, विलास पगारिया, किरणलाल गांधी, भैरुलाल पोखरणा, महावीर ताथेड यांच्याबरोबर श्री. पारसजी मोदी, श्री. अभयजी छाजेड, श्री. मनोजजी छाजेड, श्री. अशोक पगारिया इ. मान्यवर.

❖ **सिध्दी फाऊंडेशन, पुणे – रक्तदान शिबिर**
पुणे येथील सिध्दी फाऊंडेशनतर्फे स्व. श्री. मदनलालजी कचरदासजी छाजेड यांच्या ११ व्या स्मृतिप्रित्यर्थ २१ मे रोजी आदिनाथ जैन स्थानकात भव्य रक्तदान शिबिराचे आयोजन करण्यात आले. या महाशिबिरात सुमारे २०१६ जणांनी रक्तदान करुन विक्रम नोंदविला. यावेळी फोटोत श्रीमती शांताबाई मदनलालजी छाजेड, श्री. मनोज छाजेड, श्री. मुकेश छाजेड, श्री. ललीत जैन व छाजेड परिवार.

❖ **आनंद अचल ग्रुप फाऊंडेशन, पुणे**
गुरु अचलऋषिजी म.सा. यांच्या आशीर्वादाने व आनंद अचल गुरु फाऊंडेशन पुणे यांच्या वतीने १४ मे रोजी पूना हॉस्पिटल येथे १८ वर्षाखालील अपंगाची मोफत तपासणी करण्यात आली. यावेळी

डॉक्टर टिम सोबत फाऊंडेशनचे अध्यक्ष श्री. कुंदनमलजी दरडा, सचिव श्री. विलासजी पालरेशा, खजिनदार श्री. अभयजी दरडा, श्री. ओमप्रकाशजी राका, श्री. देवीचंदजी जैन, श्री. विलासजी राठोड इ. मान्यवर.

❖ **दी पूना मर्चन्ट चेंबर, पुणे**

दी पूना मर्चंट चेंबरतर्फे दुष्काळी भागात जनतेला पाणी पुरवठा करण्यासाठी टँकर व टाक्याची मदत केली. यावेळी चेंबरचे अध्यक्ष श्री. प्रवीणजी चोरबेले, उपाध्यक्ष श्री. जवाहरलालजी बोथरा, श्री. राजेंद्र शिंगवी इ. मान्यवर.

❖ **सुर्यदत्ता ग्रुप, हॉटेल मॅनेजमेंट इन्स्टिट्यूट – पुरस्कार**

पुणे येथील सुर्यदत्ता ग्रुपच्या हॉटेल मॅनेजमेंट इन्स्टिट्यूटला जीएचआरडीसी हॉटेल मॅनेजमेंट इन्स्टिट्यूट सर्व्हे २०१६ कडून एमर्जिंग एक्सलन्स या श्रेणीमध्ये प्रथम क्रमांकाने गौरविण्यात आले. या कामगिरीचे प्रमाणपत्र फोर पॉईंटस बाय शेरटनचे सह व्यवस्थापक विजयन गंगाधरण यांच्या हस्ते डॉ. संजय बी. चोरडिया व सौ. सुषमा चोरडिया व प्राचार्य वंदना मल्होत्रा यांनी स्विकारले.

❖ **श्री. विनोद शहा, पुणे – अध्यक्षपदी**

जैन सोशल ग्रुप पुणे मिडटाऊनचा पदग्रहण समारोह २४ एप्रिल रोजी पुणे येथे भव्य कार्यक्रमात संपन्न झाला. श्री. विनोद शहा यांची अध्यक्षपदासाठी निवड झाली. यावेळी श्री. अविनाशजी धर्माधिकारी, श्री. मंगेश तेंडूलकर, श्री. शरदभाई शहा इ. मान्यवर उपस्थित होते.

❖ **श्री. माणिकशेठ दुगड, पुणे**

कर्तृत्वाचे आणि दातृत्वाचे मूर्तिमंत्र प्रतिक श्री. माणिकशेठ दुगड यांचा ८१ वाढदिवस पुणे येथे साजरा करण्यात आला. ●

समाजरत्न सुभाषचन्द्र रूणवाल की हेट्रिक

खारघर में एक और हॉस्टल निर्माण की घोषणा

मुंबई: देश के अग्रणी उद्योगपति एवं फोब्स सूची में नामजद श्री. सुभाषचन्द्र रूणवाल ने अपने ७३ वे जन्म दिवस पर खारघर में एक हॉस्टल बनाने की घोषणा की है । ज्ञात रहे कि श्री. रूणवाल द्वारा इसके पहले थाने में 'आर गर्ल्स हॉस्टल', नेरूल में 'आर बॉयज् हॉस्टल' का निर्माण करवाया है, जिसमें बाहर से आनेवाले छात्रों के लिए संपूर्ण घर जैसी सुविधा उपलब्ध हैं । उन्होंने बताया कि अब खारघर में हॉस्टल का निर्माण कराया जा रहा है, जिसमें १०० छात्रों के रहने की व्यवस्था होगी । ये हॉस्टल बनाकर JATF को सुपूर्द किया जायेगा । श्री. रूणवाल JATF के चेयरमेन हैं । हॉस्टल के लिए जगह ले ली गयी है । पूरा प्लान भी पास हो गया है । इस हॉस्टल का निर्माण ६ से ८ महिने के अंतर्गत हो जायेगा । श्री. रूणवाल का मानना है कि समाज ने उन्हें बहुत ही मान-सम्मान दिया है इसलिए समाज के प्रति उनका दायित्व और बढ जाता है । 'तेरा तुझको अर्पण' के वाक्य को चरितार्थ करते हुए वे हमेशा ही समाज को कुछ ना कुछ लौटाने का प्रयत्न करते हैं । इस हॉस्टल के निर्माण से, उच्च शिक्षा ग्रहण करने हेतु बाहर से मुंबई आने वाले छात्र लाभन्वित होंगे । अभिनंदन ! ●

बालदीक्षा के संभवित राजकीय अवरोधों के दूरीकरण के बारे में निवेदन

इस मंगलक्षण में हमारे दिलों में अपार आनंद उमड़ रहा है, क्योंकि जिस बालदीक्षा ने इस जगत को महानविभूतियों की भेंट दी है उस बालदीक्षा का मार्ग निष्कटंक हो गया है। इसमें अड़चन पैदा करनेवाले अवरोधों का इस मंगलक्षण में नामोनिशान मिट गया है।

भारतीय संस्कृति में जो बालदीक्षा सदियों से स्विकृत थी उसमें पिछले एक-देढ शतक से अवरोध पैदा करने का प्रयत्न किया जा रहा था ! जब-जब ऐसे अवरोध खडे किए गए, तब-तब तत्कालीन गीतार्थ और विवेकी पूज्यों तथा समझदार सज्जनों ने इन अवरोधों को चुनौती देकर मार्ग की रक्षा की है। ऐसे ही एक अवरोध के प्रयत्नरूप वि.सं. २०५६/ई.स. २००० में रचित जुवेनाइल जस्टिस एक्ट के आधार पर बालदीक्षा को रोकने की चेष्टा की गई। जिसके कारण सदियों से प्रवाहित इस मार्ग में जोखम पैदा हो गया।

'सूरिशान्ति' के चरमपट्टधर पूज्य आचार्य श्रीमद् विजयजिनचंद्रसूरीश्वरजी महाराजा तथा आपश्री के प्रशिष्य रत्न पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय योगतिलक सुरीश्वरजी महाराजा, 'सुरिराम' समुदायवर्ती पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय महाबल सूरीश्वरजी महाराजा तथा गच्छाधिपति पूज्य आचार्य श्रीमद् विजयपुण्यपाल सूरीश्वरजी महाराजा आदि पूज्यों के आशिर्वाद तथा पीठबल से इस जोखम को खत्म करने के लिए हम प्रयत्नशील बने। जुवेनाइल जस्टिस एक्ट की जिस २ (D) कलमके आधार पर बालदीक्षा को रोकने का प्रयत्न किया जा रहा था, वह कलम भारत में प्रवर्तमान तमाम संप्रदायों में होनेवाली बालदीक्षा तथा विशेष रूप से जैनशासन में होनेवाली बालदीक्षाओं को किस प्रकार लागु न पड़े, इस बात पर संबंधित सत्ताधीशों का ध्यान केंन्द्रित करने का प्रयत्न किया गया।

हमारे श्रीसंघ तथा इस देश की धार्मिक प्रजा के परम पुण्योदय से यह बात सत्ताधीशों के हृदय में उतारने में हमें सफलता मिली है। वे सत्ताधीशोंने कलम के अर्थघटन को स्पष्ट करनेवाला सत्तावार पत्र भारत के तमाम राज्यों तथा केन्द्रशासित प्रदेशों के चीफ सेक्रेटरियों को जारी किया गया है।

इन सारी हकीकतों को उनके ओरिजनल स्वरुप में श्रीसंघ के सामने जाहीर करने में मुझे अत्यंत आनंद का अनुभव हो रहा है। इस विशेष अवसर पर हम सभी केंन्द्र सरकार में कार्यरत श्रीमती मेनका गांधी (मंत्री, महिला तथा बालसुरक्षा विभाग) के हृदय से आभारी हैं कि जिन्होने इस मुद्दे पर हमारी दलीलों को ध्यान में लेकर तुरंत कार्यवाही की। भारत के राज्यों के अधिकारियोंने इस अर्थघटन की स्पष्टता के अनुसार किसी भी स्थान पर होनेवाली बालदीक्षा को रोकने का प्रयत्न न हो इसलिए राज्य के जिला अधिकारियों को भी पत्र लिखा है । संक्षिप्त में अब कहीं भी अगर बालदीक्षा पर अवरोध खड़ा होता है तो साथ रखा हुआ पत्र दिखाने से अवरोध दूर हो जाएगा।

इस कार्य में सहयोग देनेवाले अनेक सांसद तथा इसके लिए प्रयत्न करनेवाले अपने लाड़ले विधानसभ्य सूरत निवासी श्री हर्ष संघवी का भी हम आभार मानतें है। श्री हरखचंदजी गडा एडवोकेट एण्ड सोलिसीटर) ने भी इस कार्य के लिए अथाक परिश्रम किया है तथा अतुलभाई (C.A.), छबीलभाई घोटीवाला, कवयन्नभाई संघवी, पेरेशभाई सेठ, विनोदभाई अजबाणी तथा चेतनभाई उंबरी आदि का सहयोग विशेष उल्लेखनीय है।

बालदीक्षा का यह मार्गअखण्डित रूप से चलता रहे तथा इसके द्वारा सभी आत्मकल्याण साधें इसी शुभकामना के साथ विराम लेते है।

– श्री शान्तिकनक श्रमणोपासक ट्रस्ट से
हितेश मोता का प्रणाम

जुवेनाइल जस्टिस अेक्ट २००० की कलम । २(D) के आधार पर बालदीक्षा को रोकने का प्रयत्न किया जा रहा है । वे कलम में बालदीक्षा आ ही नहीं सकती उसकी स्पष्टता करते हुए श्री मेनका गांधी के सचिव श्री. वी. सोमसुंदरन् द्वारा तमाम भारत के राज्यों को तथा तमाम केन्द्रशासित प्रदेशों को भेजी गई पत्र की नकल :–

मजकुर पत्र का हिन्दी तरजुमा :–

वि. सोमसुंदरन

सचिव
भारत सरकार
महिला और बालविकास मंत्रालय
शास्त्री भवन, नई दिल्ली – ११० ००१

दी.ओ.नं–१५ –०५/२०१५–cw-II **ता. २४ नवम्बर २०१५**

माननीय श्री

इस मंत्रालय को 'बाल दीक्षा' के मुद्दे के बारे में प्रतिनिधित्व मिला हैं, यह प्रथा अनेक नामों से बहुत धर्मों में जैसे हिन्दू, सिख, जैन बुद्ध, ईसाई, आदि में प्रचलित है । मैंने ये मामले की जाँच की है और इसके बारे में ये उल्लेखित होता है कि जुवेनाइल जस्टिस प्रणाली खास कर उन बच्चों के लिए सुनिश्चित की गयी है जिनकी आयु अठरा वर्ष के भीतर हो और जिन्हें उचित देख भाल, इलाज व सुरक्षा की जरूरत है । जुवेनाइल एक्ट (केयर एंड प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रन) एक्ट, २००० इनमें वो सभी बच्चे शामिल हैं जिन्हें देख भाल व सुरक्षा की जरूरत अथवा जो कायदे का उपहास करते हैं ।

२. एक्ट में (सेक्शन २ (डी)) के अंतर्गत 'चाइल्ड इन नीड ऑफ **'केयर एंड प्रोटेक्शन'** की व्याख्या में सभी हितधारकों जैसे कि केंद्रीय मंत्रालय, राज्य सरकार केंद्र शाषित प्रदेश, नागरिक समाज संस्था, शिक्षण संस्था एवं विशेषज्ञ आदि के साथ व्यापक परामर्श और विचार विमर्श करने के बाद ही विकसित की है यह उन बच्चों का समावेश करती है जो अनाथ, तजित, निराश्रित, या नजरअंदाज है, व जिनके साथ दुर्व्यवहार किया हैं, तथा दुर्वचन और अपशब्दों को आलोचनिय और शोषित हैं ।

३. यह उल्लेख किया जाता है कि 'बाल दीक्षा' का सामावेश 'चाइल्ड इन नीड ऑफ केयर एंड प्रोटेक्शन' की व्याख्या में नहीं होता हैं ।

४. यह सब उन संस्थाओं के सुचना में लाया जाये जो के JJ एक्ट के तहत परिपालन करते हैं जैसे की बालकल्याण समिति, बाल न्याय मंडल, इत्यादि ।

सादर के साथ
(वि. सोमसुंदरन)

नकल रवाना:
सभी राज्यों और केंद्र शाषित प्रदेशों के मुख्य सचिवों.

क्या बालदीक्षा अयोग्य है

प्रभु का शासन सर्वज्ञ का शासन है। प्रभु ने केवलज्ञान में समस्त विश्व का त्रैकालिक दर्शन कर इस रत्नत्रयीरुपी मोक्षमार्ग की स्थापना की है। तीन काल में भी यह संभव नहीं कि प्रभु का एक भी वचन अन्यथा हो। हम स्वयं भी अनुभव कर रहे हैं कि प्रभु के शासन में जो बातें हजारों वर्ष पूर्व लिखी गई थी उन बातों को धीरे धीरे आज का विज्ञान भी स्वीकार कर रहा है। इन संयोगों में प्रभु ने दीक्षा के लिए ८ से ७० वर्ष की उम्र बताई है, इसलिए बालदीक्षा में प्रश्न हो ही नहीं सकता। परन्तु आज कई लोगों के मन में बालदीक्षा को लेकर सवाल उठते हैं उनका संक्षिप्त में यहाँ समाधान प्रदान करने का प्रयत्न किया गया है।

प्र. बालदीक्षा को किस हिसाब से उचित कहा जा सकता है? क्योंकि बालक अपने भविष्य के विषय में सोच सके इतना पुख्ता नहीं होता है। इन संयोगों में कोई उसके लिए यह निर्णय ले तो यह अयोग्य है।

उ. बालक अपने भविष्य के बारे में नहीं सोच सकता, इसीलिए जैन शासन में १६ वर्ष से छोटे बालक की दीक्षा माता-पिता की सहमति के बिना नहीं हो सकती । माता -पिता जो बालक के सच्चे हितैषी हैं वो बालक की इच्छा को ध्यान में रखते हुए, वह बालक दीक्षा ले इसके लिए प्रयत्न करें तथा बालक भी राजीखुशी दीक्षा लेने के लिए तैयार हो तो दीक्षा देने में क्या गलत है? अगर यह गलत है तो आज के माता-पिता अपनी मुर्खता का प्रदर्शन करते हुए देढ़ वर्ष के बालक को स्कूल में धकेल देते है क्या वह योग्य है? जिस प्रकार वहाँ आप ये ही सोचतें हो कि उनके भविष्य की चिन्ता करके ऐसा करते है । तो उसी प्रकार यहाँ भी माता-पिता उसके भवोंभव के भविष्य का विचार करके यह प्रयत्न करते हैं । जब बालक अपनी इच्छा से तैयार होता है तब बिना किसी जोर जबरदस्ती के दीक्षा दिलवाएँ तो क्या गलत है? बल्कि अगर दीक्षा न दिलवाएँ तो महापाप है क्योंकि उन्होने बालक को सच्चे सुख के मार्ग पर जाने से रोका है।

प्र. बालक को जातीय लगाव का कोई अनुभव नहीं होता , ऐसी परिस्थिति में दीक्षा दे दी और आगे जाकर यह समस्या खड़ी होती है तब विकट परिस्थिती का निर्माण होता है। क्या यह योग्य है?

उ. जातीय लगाव अर्थात् वस्तुत:जीव में रही हुई मैथुनसंज्ञा। यह मैथुनसंज्ञा तो जीव पूर्वभव के संसार से लेकर ही आता है। यह गर्भ से लेकर मृत्यु पर्यंत ही नहीं बल्कि अगले जन्म में भी जीव के साथ जाती है। उसका स्वरुप उम्र के प्रमाण से अलग-अलग होता है। छोटी उम्र में खिलौने तथा माता-पिता का लगाव, किशोरवय में खेलना-कूदना तथा साहस, यौवनवय में विजातीय का लगाव, थोडी और बडी उम्र में पैसा, प्रौढवय में सत्ता अथवा नामना, वृद्धावस्था में संतान, स्वजन, परिचित वर्ग इत्यादि के प्रति जीव को आकर्षण होता है। थोडी बहुत उम्र के लोग स्त्री को छोड सकते है, परन्तु सत्ता को नहीं छोड़ सकते है तो ऐसे लोगों को दीक्षा नहीं दी जाती । उसी प्रकार बालक अगर अपनी उम्र के मुताबिक खिलौने तथा माता-पिता को छोड सके तो ही उसे दीक्षा दी जाती है। यह छोड़ने का काम सभी बालक प्रयत्न करने के बावजूद भी नहीं कर पाते। कोई पुर्वभव की योग्यतावाला बालक ही कर सकता है। उनका लगाव अभी भी काबु में है इसलिए यौवनवय में भी स्त्री का राग छोड़ना उनके लिए सहज है । अगर योग्य सावधानी न रखी जाए तो समस्या खड़ीहो सकती है, परन्तु यह तो असावधानी की गडबड है, बालदीक्षा की नहीं।

प्र. दीक्षा देने से बालक की विराट दुनिया को सीमित कर दिया है, ऐसा नहीं लगता ?

उ. जो बालक एक एक सद्गृहस्थ के परिवार में योग्यता लेकर जन्म लेता हो उसे बचपन से ही टी.वी.,

मोबाईल तथा इंटरनेट का चस्का लगाकर कर उसकी योग्यताओं का दिवाला निकाल देना । तथा इस विराट दुनिया में वह बालक बड़ा होकर नितांत स्वार्थी हो जाए, सिर्फ अपने बारे में सोंचें ऐसी स्थिति का सर्जन करने में कोई दिक्कत नहीं, और जो बालक बड़ा होकर परोपकारी बने, समस्त जीवसृष्टि को अपना मानकर उसका ध्यान रखे, जगत में लायक लोगों को सत्पथ प्रदर्शन से तथा शताब्दीयों-सहस्त्रब्दीयों तकअपने ज्ञान आचार के प्रताप से संस्कार दायक बने उसमें आपको बालक की दुनिया सीमित हो गई ऐसा लगता है?

यह विचार कर प्रभु द्वारा प्ररूपित इस मार्ग को बहता रखने में हम तन-मन-धन से प्रयत्नशील बनें। ●

(इस विषय में ज्यादा जानकारी हेतु 'बालदीक्षा को राजमान्यता' पुस्तक निम्नोक्त पते से मंगवाए।

श्री शान्तिकनक-आराधनाभवन, कदम्ब भवन के सामने, नानपुरा, सूरत-१) ●

महाराष्ट्रातील जास्तीत जास्त जैन समाजापर्यंत पोहचण्याचा सर्वांत खात्रीशीर, सर्वांत सोपा व सर्वांत स्वस्त मार्ग...

जैन जागृति

वधू-वर जाहिरात 'जैन जागृति' मासिकात व वेबसाईटवर द्या.

हजारो जैन परिवार व त्यांचे नातेवाईक, मित्रपरिवार पर्यंत पोहचा.

आपणांस वधू-वर निवडताना योग्य चॉईस मिळण्यास मदत होईल.

महाराष्ट्रातील जास्तीत जास्त जैन समाजापर्यंत पोहचण्याचा सर्वात खात्रीशीर, सर्वात सोपा व सर्वात स्वस्त मार्ग...

जैन जागृति